अघोर चतुर्दशी - 10 सितम्बर 2026

शिव अघोरेश्वर साधना



मन-बुद्धि में एकाग्रता... आनन्द भाव

आत्मबल एवं सकारात्मक चेतना... आनन्द भाव

आध्यात्मिक प्रगति... आनन्द भाव

आत्मज्ञान और परमात्मा से एकत्व की अनुभूति... आनन्द भाव

अघोर तत्व के इस विशुद्ध स्वरूप की साधना करना ही साधक के जीवन का सौभाग्य है, क्योंकि धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा तो किसी अन्य साधना से भी प्राप्त हो सकते हैं, परन्तु यह सब प्राप्त हो, और साथ ही प्राप्त हो एक आन्तरिक आनन्द, एक आन्तरिक मस्ती, एक आन्तरिक खुमारी, हृदय के अन्दर लहराता हुआ शांति का समुद्र, ...ऐसा तो केवल अघोर तंत्र साधना के माध्यम से ही संभव है। **एक तरफ जहां साधक के भौतिक जीवन में किसी प्रकार की कोई अड़चन, कोई न्यूनता नहीं रहती, सभी प्रकार के भौतिक सुख उसे प्राप्य होते हैं, वहीं वह जीवन में सभी प्रकार के आनन्द का रसास्वादन करता है, जो कि एक आध्यात्मिक उपलब्धि है।**

अघोरेश्वर साधना आवश्यक

1. शरीर में स्थित दैहिक दोष पूर्ण रूप से समाप्त हो जाते हैं और शरीर में एक कान्ति या द्युति छा जाती है।
2. मूल रूप से शिवत्व प्राप्ति की साधना होने से **साधक के व्यक्तित्व में एक गजब का सम्मोहन, आकर्षण व्याप्त हो जाता है** और उसके प्रशंसकों की संख्या बढ़ने लगती है।
3. अघोर रूप सिद्ध होने पर व्यक्ति शत्रुओं का शमन करने में समर्थ हो जाता है या दूसरे अर्थों में **शत्रु स्वयं ही उसके सामने आने से कतराने लगते हैं।**
4. **उसके ऊपर मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि का प्रभाव नहीं पड़ता।**
5. शिव के औघड़दानी, अघोर स्वरूप की कृपा प्राप्त होने से उसके जीवन में **धन-धान्य की कमी नहीं रहती।**
6. भगवान शिव की तरह ही वह **निरन्तर आनन्द और मस्ती में डूबा रहता है,** उसकी चिन्ताएं धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं।

साधना विधान -

इस साधना को **अघोर चतुर्दशी (10 सितम्बर 2026)** अथवा **किसी भी सर्वार्थ सिद्धि योग, पुष्प योग, प्रदोष, अमावस्या अथवा किसी भी सोमवार** के दिन प्रारम्भ किया जा सकता है। प्रातः काल स्नानादि कर पीले वस्त्र धारण कर गुरु पीताम्बर ओढ़ लें। भगवान सदाशिव के अघोरेश्वर अर्थात् आरोग्य प्रदाता स्वरूप की साधना से पूर्व सद्गुरुदेव निखिल का पूजन अवश्य सम्पन्न करना चाहिए। इस हेतु सर्वप्रथम अपने सामने गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका स्थापित कर लें और दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव निखिल का ध्यान करें -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

निखिल ध्यान के पश्चात् गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका को जल से स्नान करावें -

ॐ निखिलम् स्नानम् समर्पयामि॥

इसके पश्चात् स्वच्छ वस्त्र से पौंछ लें निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए कुंकुम, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप-दीप से पंचोपचार पूजन करें -

ॐ निखिलम् कुंकुम समर्पयामि।
ॐ निखिलम् अक्षतान समर्पयामि।
ॐ निखिलम् पुष्पम् समर्पयामि।
ॐ निखिलम् नैवेद्यम् निवेदयामि।
ॐ निखिलम् धूपम् आघ्रापयामि, दीपम् दर्शयामि।

(धूप, दीप दिखाएं)

अब तीन आचमनी जल गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका पर घुमाकर छोड़ दें। इसके पश्चात् गुरु माला से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें –

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

गुरु पूजन के पश्चात् गुरु चित्र के समक्ष ही किसी ताम्र पात्र में **'अघोरेश्वर यंत्र'** को स्थापित करें, उस पर **'रुद्राक्ष माला'** रखें तथा दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें –

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णुराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेत वाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तैक देशान्तरगर्ते पुण्यक्षेत्रे अमुक गोत्रीयः (अपना गोत्र बोलें) अमुक शार्माऽहं (नाम बोलें) अद्य सकल मनोकामना पूर्ति निमित्तं अघोराख्यं साधनां संपत्यस्ये

जल भूमि पर छोड़ दें।

दिग्बन्धन

चारों दिशाओं में जल छिड़कते हुए बोलें –

पूर्व –

ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर दुरितान्तक पूर्व दिशं बन्धय बन्धय। माम् रक्ष रक्ष। प्रस्फुर प्रस्फुर।

दक्षिण –

घोर पशुपते दक्षिण दिशं बन्धय बन्धय माम् रक्ष रक्ष।

पश्चिम –

त्रिलोचन पश्चिमदिशं बन्धय बन्धय। माम् रक्ष रक्ष। प्रचट प्रचट।

उत्तर –

गंगाधर उत्तरदिशं बन्धय बन्धय। माम् रक्ष रक्ष। वम वम।

विनियोग –

अस्य श्री अघोर मंत्रस्य अग्नि ऋषिः अनुष्टुप छन्दः अघोर रुद्रो देवता। मम इष्टकाम्यार्थ सिद्धयर्थे विनियोगः।

– जल को जमीन पर छोड़ दें।

न्यास

निम्न मंत्र बोलते हुए निर्दिष्ट अंगों को स्पर्श करें –

ॐ अघोरेभ्यो हृदयाय नमः। (हृदय)
अथ घोरेभ्यः शिरसे स्वाहा। (सिर)
घोरघोरतरेभ्यः शिखायै वौषट्। (शिखा)
सर्वेभ्यः कवचाय हुं। (पूरा शरीर)
सर्व शर्वेभ्यो नेत्रत्रयाय वषट्। (दोनों नेत्र)
नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः अस्त्राय फट्। (अपने सिर पर हाथ घुमा कर ताली बजाएं)

ध्यान

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारु-चन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्ग परशु-मृग-वराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं, विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।

भगवान सदाशिव हिमगिरि के समान, चक्रधर, रत्न जैसी उज्ज्वल देह, चारों हाथों में परशु, मृग, वर और अभय मुद्रा को धारण किए हुए, प्रसन्न, पद्म पर विराजमान, देवगणों से स्तुत्य व्याघ्र चर्म धारण किए हुए। सर्वादि, सर्ववन्द्य, समस्त श्रमहारी, पंचमुख एवं त्रिनेत्र रूपी शिव को मेरा प्रणाम्।

दोनों हाथ जोड़कर अघोरेश्वर भगवान शिव को प्रणाम करें तथा पूर्ण श्रद्धायुक्त होकर **रुद्राक्ष माला** से निम्न मंत्र का जप 11 दिन तक नित्य 5 माला जप करें –

//अघौरेभ्यौ अथ् घोरेभ्यौ घोर घोर तरेभ्यः सर्वत शर्व सवेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्र रुपेभ्यौ नमः//

अघोरेश्वर साधना 11 दिवसीय साधना है, ग्यारहवें दिन मंत्र जप के पश्चात् घृत से उपरोक्त मंत्र बोलते हुए अग्नि में 108 बार आहुति दें। ऐसा करने से यह साधना पूर्ण मानी जाती है। साधना समाप्ति के तीन दिन तक यंत्र व माला को पूजा स्थान में ही रहने दें, इसके पश्चात् यंत्र व माला को जल में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठत अघोरेश्वर यंत्र – 450/–, रुद्राक्ष माला – 300/–